कोटा || श्री पार्श्वनाय नमः|| rajasthan

मेरा नाम नरहरी शर्मा है वैसे मै रामगंज मंडी के पास संधारा गाँव का रहने वाला हूँ और अभी कुछ समय से कोटा नौकरी हेतु आया हूँ और ड्राइवर का काम करता हूँ हमने पहले भी २-३ बार मुनि श्री अविचल सागर जी के दर्शन किये थे। पहली बार संधारा मे और फिर चवलेश्वर में २-३ बार ।

फिर जब मुनि श्री का विहार कोटा की तरफ हुआ तो हम और हमारे मालिक बिहार में साथ चले। मुनिश्री भी कोटा मे श्री १००८ पार्श्वनाथ मंदिर स्टेशन रोड जिनालय में विराजमान हुए थे।

वैसे महाराज जी के सुबह और सायंकाल के समय प्रवचन होते थे और मैं हमारे मालिक के साथ जैन मंदिर रोज जाता था। लेकिन कभी मुनिराज जी जहाँ विराजमान थे वहाँ तक नही गया था।

आज तीसरा दिन था उनको यहाँ आये हुए , सायंकाल के समय जब हम गुरू वंदना में पहुँचे थे। तो आज मेरा भी मन हुआ महाराज जी के पास जाने का तब वहाँ के व्यवस्थापक थे उनसे अनुमति लेकर, पूछकर उनके सभा मंडप हॉल में पहुँच गया पूरा सभा कक्ष धर्म बंधुओं से भरा हुआ था हमें पीछे ही बैठना पड़ा उस समय मुनि श्री श्री १००८ आदिनाथ भगवान की स्तुति की महिमा का वर्णन कर रहे थे । और शायद आदिनाथ जी का जीवन संबंधी घटनाओं को लेकर स्वयं ही अपने विचार से प्रभु स्तुति कर रहे थे।

लगभग ५ मिनट तक हम सुनते ही रहे गये कि प्रभु का ऐसा दिव्य वर्णन लेकिन तभी अचानक देखा कि मुनि जी के पूरे शरीर से केसरिया रंग की रोशनी निकल रही है पहले लगा कि भ्रम होगा ऐसा सोचकर फिर से उनका प्रवचन सुनने लगे। लेकिन फिर से वही रोशनी शरीर से बाहर आने लगी। इस बार हम ध्यान से उसे ही देखने लगे और वह रोशनी इतनी बढ़ गयी कि जो सभा भवन था उसमें पूरे में फेल गयी मेरी आँखें भी चमक उठी उस रोशनी से तो आँखे बन्द करनी पड़ी उस रोशनी के तेज की वजह से।

आँखे खोलने पर देखा तो अब वह रोशनी मुनि श्री के सर के पीछे गोल चक्र बनकर घूम रही थी और वह रोशनी उनके शरीर के पूरे अंग को घेर कर दिख रही थी। बहुत देर तक हम यह दिव्य दृश्य देखते ही रह गये हमारे पूरे होश उड़ गये थे यह दृश्य देखकर वहाँ बैठे-बैठे मेरे आँखों से आँसू बहने लगे, तो उनको पोछकर फिर

से देखा तो वही दिव्य दृश्य दिख रहा था। आधा घंटा वह दृश्य मुझे दिखता रहा। उसके बाद प्रवचन समाप्त हुए और हम उठकर घर वापस आये। रात्रि के समय मालिक को बताया सब तो उनको भी आश्चर्य हुआ।

सुबह जल्दी उठाकर फिर मुनि श्री के दर्शन हेतु गये और दर्शन कर उन्हें सब बताया रात्रि का वृतान्त तो मुनि श्री मुस्कुरा कर' ठीक है बोलकर मौन हो गये। इस दिव्य दृश्य के दिखने के बाद हम फिर से दर्शन हेतु पिपरई मध्यप्रदेश गये थे वहाँ भी महाराज श्री अविचल सागर जी धर्म सभा में थे और प्रवचन चल रहे थे हम बैठ गये और फिर वही दिव्य दृश्य प्रगट हुआ हम धन्य हो गये ऐसे सन्त के दर्शन करके। प्रवचन के उपरान्त जब मुनि श्री अपने अध्ययन कक्ष में गये तब हमने अपनी बात वहाँ के कुछ श्रावकों बताई की चलो गुरूजी के बारे में अपने अनुभव बताऐं। जब हमने बताया तो वहाँ के श्रावकों ने भी बताया कि यहाँ भी ५-६ लोगों को मुनिश्री जब बैठे रहते, ध्यान या प्रवचन में तब उनके आस-पास और शरीर में रोशनी दिखती है। वह भी हरे, लाल, केसरिया सूर्य के समान श्वेत धवल रंग में।

मेरी जिज्ञासा बढ़ गई और उनसे मिला जिनके यह दिव्य दृश्य दिखता था और उन्होंने जो अनुभव साक्षात अपनी आँखों से देखा वह सब बताया।

आज हम अपने जीवन को सार्थक समझते हैकि यह साधक और उनकी साधना का फल कितना आलौकिक है। इस नश्वर जगत में भी इस शरीर के साथ ऐसे महापुरुष भी जीवंत है। इसी का आश्चर्य और वह अपना परिचय भी प्रगट नहीं करते।

नमस्कार हो उन सन्तों को

उनकी साधना को

प्रभु ....को